डॉ. जेम्स एस. स्पीगल, ईसाई नैतिकता, सत्र 8, प्राकृतिक कानून नैतिकता

© 2024 जिम स्पीगल और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. जेम्स एस. स्पीगल द्वारा ईसाई नैतिकता पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 8 है, प्राकृतिक कानून नैतिकता।

ठीक है, तो दैवीय आदेश सिद्धांत पर चर्चा करने के बाद, हम नैतिक सिद्धांत में एक और प्रमुख धार्मिक परंपरा को देखने जा रहे हैं, और वह है प्राकृतिक कानून नैतिकता।

यह विशेष रूप से ऑगस्टीन और थॉमस एक्विनास से जुड़ा है, लेकिन प्राकृतिक कानून नैतिकता की जड़ें प्राचीन ग्रीस, सुकराती दर्शन, विशेष रूप से अरस्तू और स्टोइक तक जाती हैं। तो, यहाँ प्राकृतिक कानून नैतिकता के कुछ मुख्य विषयों का सारांश दिया गया है। हम इस विचार से शुरू करते हैं कि हर चीज का एक टेलोस, एक उद्देश्य, एक लक्ष्य या एक कार्य होता है।

यह निश्चित रूप से मानव निर्मित वस्तुओं, घड़ियों, जूतों, जहाजों और हमारे द्वारा बनाई गई हर चीज़ पर लागू होता है। आप जानते हैं, इन चीज़ों का एक उद्देश्य, एक लक्ष्य, एक कार्य होता है जिसे उन्हें पूरा करना चाहिए। लेकिन इसमें मनुष्य भी शामिल है, यह विचार कि मनुष्य का एक कार्य या एक उद्देश्य है, जो ईसाई धर्मशास्त्र में स्पष्ट है।

भगवान ने मनुष्य को एक खास तरीके से बनाया है। उसने हमारे अंगों को विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति के लिए एक खास तरीके से बनाया है। और अगर हम बारीकी से देखें कि हमें किस तरह से बनाया गया है और हमारी डिजाइन योजना क्या है, तो हम उन विभिन्न कार्यों से कुछ नैतिक सत्यों का अनुमान लगा सकते हैं।

तो, हर प्राकृतिक वस्तु और मनुष्य के लक्ष्य का स्रोत ईश्वर है। उसने दुनिया को एक कार्यात्मक, तर्कसंगत प्रणाली के रूप में बनाया है। उसने जो भी चीज़ें बनाई, उन्हें उसने कुछ खास उद्देश्यों के लिए बनाया।

तो, हम इससे यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि कुछ निश्चित प्राकृतिक नियम हैं। और इनमें से कुछ वर्णनात्मक हैं, और अन्य निर्देशात्मक हैं। उदाहरण के लिए, भौतिकी में, हम गुरुत्वाकर्षण के विभिन्न नियमों, व्युत्क्रम वर्ग नियम, ऊष्मागतिकी के नियमों, मजबूत और कमजोर परमाणु बलों, अवोगाद्रो स्थिरांक के बारे में बात कर सकते हैं।

प्रकृति में ये सभी नियमितताएँ ईश्वर द्वारा कुछ खास उद्देश्यों की पूर्ति के लिए बनाई गई हैं, ताकि जीवन को हम जिस रूप में जानते हैं, वह संभव हो सके। इसलिए, हम उन्हें प्राकृतिक नियम या प्रकृति के नियम कहते हैं। लेकिन ऐसे निर्देशात्मक नियम भी हैं जो हमें बताते हैं कि हमें कैसे कार्य करना चाहिए, हमें किस तरह का व्यवहार अपनाना चाहिए और किस तरह का आचरण हमारे लिए सबसे ज़्यादा फ़ायदेमंद होगा।

तो यह प्राकृतिक नियम है। और जब हम इन प्राकृतिक नैतिक नियमों या नुस्खों का पालन करते हैं, तो चीजें हमारे लिए अच्छी होती हैं। लेकिन जब हम उनसे भटक जाते हैं, तो चीजें खराब होने लगती हैं।

और फिर, इसका संबंध इस बात से है कि हम अपने आचरण के संदर्भ में अपने टेलोस या अपनी डिज़ाइन योजना को कितनी अच्छी तरह पूरा कर रहे हैं। इसलिए, अगर हम झूठ बोलते हैं, धोखा देते हैं, चोरी करते हैं, या यौन रूप से गलत व्यवहार करते हैं, और हम इन प्राकृतिक नुस्खों का उल्लंघन करते हैं, तो हमारे लिए चीजें खराब हो जाती हैं। इसके बुरे और दर्दनाक परिणाम होते हैं।

अब, हम इन प्राकृतिक नियमों को खोजने में सक्षम हैं क्योंकि ईश्वर ने हमें तर्कसंगत बनाया है; हम ईश्वर की छवि में बनाए गए हैं, और इसलिए उसने हमारे दिमाग को इन विभिन्न प्राकृतिक नियमों के प्रति सचेत रहने और सामान्य अर्थों में हमें कैसे जीना चाहिए, इसके लिए तैयार किया है। जैसा कि एक्किनास कहते हैं, हम अपने मूल लक्ष्यों को जानते हैं, और उन चीजों में आत्म-संरक्षण, समझ का पीछा करना, अपनी संतानों को शिक्षित करना और दूसरों को नुकसान पहुँचाने या अपमानित करने से बचना शामिल है। अब, नैतिकता के प्रति यह दृष्टिकोण न केवल दार्शनिक है, बल्कि यह धार्मिक भी है।

वास्तव में, इसकी जड़ें बाइबल में हैं। हम इन्हें रोमियों 1, भजन 40, यिर्मयाह 31, रोमियों 2, इब्रानियों 8 और कुछ अन्य स्थानों में पाते हैं। रोमियों 2 में एक महत्वपूर्ण अंश है, जहाँ पौलुस लिखता है, जब अन्यजाति, जिनके पास व्यवस्था नहीं है, स्वभाव से व्यवस्था द्वारा अपेक्षित कार्य करते हैं, तो वे स्वयं के लिए व्यवस्था हैं, भले ही उनके पास व्यवस्था न हो।

वे दिखाते हैं कि कानून की ज़रूरतें उनके दिलों पर लिखी हुई हैं, उनके विवेक भी गवाही देते हैं, और उनके विचार कभी-कभी उन पर आरोप लगाते हैं और कभी-कभी उनका बचाव भी करते हैं। तो, यहाँ यह विचार प्रतीत होता है कि हमारे पास सही और गलत की एक स्वाभाविक, जन्मजात या सहज समझ है, कम से कम हमारे व्यवहार के लिए मौलिक नुस्खे, जिनके बारे में वे लोग भी जानते हैं जिन्हें किसी विशेष रहस्योद्घाटन का अनुभव नहीं है, और इसलिए पॉल कहते हैं कि ये बातें दिलों पर लिखी हुई हैं, जो एक प्रसिद्ध रूपक है। तो, आइए एक प्रमुख प्राकृतिक कानून सिद्धांतकार, थॉमस एक्किनास पर थोड़ा और करीब से नज़र डालें।

वह कानून की विभिन्न श्रेणियों को तोड़ता है। वह हमें एक वर्गीकरण प्रदान करता है जो यहाँ मददगार है। कानून की उनकी सामान्य परिभाषा एक ऐसे व्यक्ति द्वारा प्रवर्तित सामान्य भलाई के लिए तर्क का अध्यादेश है जिसने समुदाय की देखभाल की है, और निश्चित रूप से, यह संघीय या राष्ट्रीय सरकारों से लेकर स्थानीय सरकारों, और परिवारों, और चर्चों तक कई स्तरों पर लागू हो सकता है और लागू होता है।

लेकिन कानून की सबसे व्यापक श्रेणी वह है जिसे वह शाश्वत कानून कहते हैं, और यह ईश्वर के उन सभी आदेशों का योग है जो ब्रह्मांड को नियंत्रित करते हैं, और प्राकृतिक कानून शाश्वत

कानून का वह पहलू है जिसे तर्क द्वारा समझा जा सकता है। यह शाश्वत कानून का वह पहलू है जिसे हम अपनी तर्कसंगत जांच के माध्यम से समझ सकते हैं, और फिर, शाश्वत कानून का यह पहलू जिसे हम खोज सकते हैं वह हमारे प्राकृतिक अच्छे के लिए, हमारे लाभ के लिए लक्षित है, और इसमें कुछ प्राथमिक नियम शामिल हैं, जिन्हें, जैसा कि कहा गया है, नैतिक सिद्धांत हैं जिन्हें हम नहीं जान सकते। ये ऐसी चीजें हैं जो चाहे आप कोई भी हों, चाहे आपने कितनी भी शिक्षा प्राप्त की हो, यह मानते हुए कि आप मूल रूप से संज्ञानात्मक रूप से कार्यात्मक हैं, आप जानेंगे, जैसे कि आपको अच्छाई का पीछा करना चाहिए और बुराई से बचना चाहिए, आपको अपने पड़ोसी से प्यार करना चाहिए।

नैतिक सिद्धांत जिन्हें हम नहीं जान सकते। जे. बुडज़िज़ेव्स्की अपने काम में अक्सर इस वाक्यांश का इस्तेमाल करते हैं। वह एक समकालीन प्राकृतिक कानून सिद्धांतकार हैं जिनके बारे में हम थोड़ी देर में बात करेंगे।

फिर, द्वितीयक नियम हैं। ये नैतिक मानदंड हैं जो प्राथमिक नियमों से प्राप्त होते हैं और इनके अनुप्रयोग अभी भी सामान्य हैं, लेकिन वे प्राथमिक नियमों से प्राप्त होते हैं, जिसमें यह भी शामिल है कि हमें लोगों से झूठ नहीं बोलना चाहिए, और हमें दूसरों से कहना चाहिए कि जो दूसरों का है, उसे वापस करना चाहिए। ये अच्छे काम करने, बुराई से बचने और अपने पड़ोसी से प्यार करने के विचार के सामान्य अनुप्रयोग हैं, उदाहरण के लिए।

तीसरा, ईश्वरीय कानून है, जो शाश्वत कानून का वह पहलू है जो धर्मग्रंथों में पाया या व्यक्त किया गया है, और इसमें सभी प्रकार की चीजें शामिल हैं जो प्राकृतिक कानून से परे हैं जिन्हें हम केवल तर्कसंगत जांच के माध्यम से नहीं समझ सकते हैं। इसके लिए हमें एक विशेष रहस्योद्घाटन की आवश्यकता है। और फिर, अंत में, मानवीय कानून है, जो नागरिक समाज के लिए प्राकृतिक कानून के अनुप्रयोगों और शायद ईश्वरीय कानून के अनुप्रयोगों को संदर्भित करता है।

इसलिए, हमारे पास यातायात कानून, स्टॉप साइन, गति सीमा, इत्यादि हैं। ये जीवन को बचाने और समाज को एक निश्चित व्यवस्था और सुरक्षा बनाए रखने में मदद करने के लिए बनाए गए हैं। ये निश्चित रूप से ऐसी चीजें नहीं हैं जो हमें शास्त्रों से मिलती हैं, लेकिन ये ऐसे कानून हैं जो मानव जीवन को बेहतर बनाते हैं।

समाज में ऐसे कानून भी स्थापित किए गए हैं जो मूल रूप से बाइबिल के कानूनों के प्रत्यक्ष अनुप्रयोग हैं, जैसे व्यभिचार के खिलाफ कानून जो संयुक्त राज्य अमेरिका में आम हुआ करते थे। इसलिए, मानवीय कानून प्राकृतिक कानून, दैवीय कानून या दोनों से कुछ अंतर्दृष्टि लागू कर सकते हैं। अब, प्राकृतिक कानून के बारे में हमारा तर्क या हमारी सोच विभिन्न तरीकों से विकृत, अस्पष्ट या विकृत हो सकती है, और एक्विनास इनमें से कुछ तरीकों की पहचान करता है।

इनमें से एक है जुनून, क्योंकि व्यक्ति क्रोध जैसी प्रबल भावनाओं से अभिभूत हो जाता है। अगर किसी ने आपके साथ कुछ अन्याय किया है, तो आप अति प्रतिक्रिया कर सकते हैं और सोच सकते हैं कि वे किसी ऐसी प्रतिक्रिया के हकदार हैं जो वास्तविक न्याय से परे हो, और इससे आपका गुस्सा आपकी सोच को प्रभावित कर सकता है, साथ ही यौन जुनून और अन्य जुनून

हमारी सोच को प्रभावित कर सकते हैं और प्राकृतिक कानून की हमारी समझ को अस्पष्ट कर सकते हैं। बुरी आदतें भी प्राकृतिक कानून के बारे में हमारी सोच को विकृत कर सकती हैं।

उदाहरण के लिए, पोर्नोग्राफी को बार-बार देखने से व्यक्ति की यौन नैतिकता और प्राकृतिक कानून के बारे में समझ खराब हो सकती है, क्योंकि यह उस पर लागू होता है। प्रकृति के बुरे स्वभाव को एक्किनास ने एक और श्रेणी के रूप में पहचाना है। शायद शराब पीने की आनुवंशिक प्रवृत्ति। उस प्रवृत्ति या प्रवृत्ति के लिए कुछ आनुवंशिक जड़ें हैं।

शायद यह एक उदाहरण के रूप में योग्य है जिसके बारे में एक्किनास यहाँ बात कर रहे हैं। दुष्ट प्रथा एक और होगी, जैसे कि ऐसे समाज में बड़ा होना जो कुछ प्रकार के अवैध व्यवहार, जैसे व्यभिचार या यौन संकीर्णता को मंजूरी देता है, या मुझे लगता है कि एक्किनास रिश्वतखोरी की मंजूरी का उदाहरण देता है। यदि जिस समुदाय में आप पले-बढ़े हैं, वह कुछ प्रकार के बुरे या अनैतिक व्यवहार को मंजूरी देता है, तो जिस हद तक आप उससे प्रभावित होते हैं, वह प्राकृतिक कानून की आपकी समझ को विकृत कर सकता है।

और फिर, अंत में, दुष्ट अनुनय। जब कोई व्यक्ति कुछ दार्शनिक तर्कों से आश्वस्त हो जाता है कि एक विशेष प्रकार का व्यवहार नैतिक रूप से स्वीकार्य है, जबकि ऐसा नहीं है, तो प्राकृतिक कानून के बारे में उनकी सोच उस सीमा तक विकृत हो जाती है। यह सूची संभवतः संपूर्ण नहीं है, लेकिन ये कुछ ऐसे तरीके हैं जिनके बारे में एक्किनास ने उल्लेख किया है कि प्राकृतिक कानून के बारे में सोच विकृत हो सकती है।

अब, प्राकृतिक कानून के बारे में कई आपत्तियाँ की गई हैं और उनमें से एक यह है कि प्राकृतिक कानून नहीं हो सकता क्योंकि कोई भी नैतिक सिद्धांत ऐसा नहीं है जिसे कोई व्यक्ति अस्वीकार कर सके। हम हमेशा किसी ऐसे व्यक्ति को पा सकते हैं जो किसी बहुत ही दुष्ट व्यवहार का समर्थक हो, आप जानते हैं, चाहे वह सामूहिक हत्या हो या बलात्कार या सबसे बुरी चीजें जो हम सोच सकते हैं। हम उन्हें समाज विरोधी कह सकते हैं, लेकिन वे अभी भी वहाँ हैं।

और हमें इसका जवाब कैसे देना चाहिए? यह जे. बोचेंस्की और उनका जवाब है। उनके पास यहाँ कुछ जवाब हैं। उनका कहना है कि हम उन चीज़ों को जान सकते हैं जिनके बारे में हमें नहीं पता कि हम जानते हैं।

और इसलिए भले ही कोई व्यक्ति किसी प्राकृतिक कानून को नकार दे, कम से कम मौन रूप से तो नकार दे, लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि वह उस प्राकृतिक कानून को नहीं जानता। हो सकता है कि वह उस बात को नकार रहा हो जिसे वह वास्तव में जानता है। इसलिए, ऐसी चीज़ें हैं जिन्हें हम जान सकते हैं लेकिन हम नहीं जानते कि हम क्या जानते हैं।

और निश्चित रूप से यह अन्य क्षेत्रों में भी सच है, जैसे तर्कशास्त्र में। एक व्यक्ति विरोधाभास के नियम को जान सकता है, जो कहता है कि कोई चीज़ एक ही समय में और एक ही संबंध में हो भी सकती है और नहीं भी, बिना यह जाने कि वे यह जानते हैं। शायद हम उन्हें इस अवधारणा को थोड़ा समझाएँ और वे कहें, ठीक है, हाँ, मुझे यह पता था।

मुझे नहीं पता था कि इसे क्या कहते हैं। तो, ऐसी चीज़ें हैं जिन्हें हम जान सकते हैं, लेकिन हम नहीं जानते कि हम जानते हैं। और यह भी संभव है कि हम उन चीज़ों को दबाएँ या दबाएँ जिन्हें हम जानते हैं।

इसलिए भले ही कोई व्यक्ति इस बात से इनकार कर सकता है कि सभी मनुष्यों के पास अधिकार हैं, कि सभी जातियों और दोनों लिंगों के लोगों के पास समान अधिकार हैं, इसका मतलब यह नहीं है कि वे वास्तव में इसे नहीं जानते हैं। वे इसे दबा रहे हैं या इसका दमन कर रहे हैं। वे किसी न किसी कारण से इसे स्वीकार नहीं करना चाहते हैं।

और इसलिए, वे इसे जानते हैं, लेकिन वे यह स्वीकार नहीं करना चाहते कि वे इसे जानते हैं। इसलिए, मुझे लगता है कि इस आपत्ति के लिए ये कुछ सहायक उत्तर हैं। एक और आपत्ति यह है कि कोई प्राकृतिक नियम नहीं हो सकता क्योंकि लोग नए मूल्यों का आविष्कार करते हैं।

तो बोचेंस्की ने इसका जवाब देते हुए कहा कि यह बिलकुल झूठ है। लोग मूल्यों का आविष्कार नहीं कर सकते, कम से कम सच्चे मूल्यों का, ठीक उसी तरह जैसे वे एक नए प्राथमिक रंग का आविष्कार नहीं कर सकते। ऐसा लग सकता है।

वे ऐसे शब्दों में बात कर सकते हैं जो उस दिशा में प्रेरक लग सकते हैं। मेरे पास एक नया मूल्य है और फिर मैं उसे एक नाम देता हूँ। लेकिन जैसा कि बोचेंस्की ने कहा है, यह शायद है, या यह पुराने और जाने-माने सच्चे मूल्य के लिए एक नया लेबल है।

तो इस तरह से वह उन आपत्तियों का जवाब देता है। इसलिए, प्राकृतिक कानून नैतिकता की सभी अंतर्दृष्टि के लिए, कुछ सीमाएँ हैं। एक बात जो ध्यान में आई है वह यह है कि यह कुछ विशिष्ट नैतिक मुद्दों या दुविधाओं के बारे में बहुत कम मदद प्रदान करता है।

उदाहरण के लिए, वितरणात्मक न्याय का नैतिक मुद्दा। न्यायपूर्ण समाज में वस्तुओं और संसाधनों का वितरण कैसे किया जाना चाहिए? नशीली दवाओं का वैधीकरण। भले ही नशीली दवाएं अनैतिक हों, मनोरंजक दवाएं, कम से कम अगर उनमें से कई अनैतिक हैं, तो भी सवाल बना रहता है: क्या उन मनोरंजक दवाओं को बहुलवादी समाज में वैध होना चाहिए? इस तरह के मुद्दे किसी भी मामले में मुश्किल हैं, और प्राकृतिक कानून नैतिकता इन मामलों में न्यूनतम रूप से मददगार लगती है।

और साथ ही, कभी-कभी यह बताना मुश्किल होता है कि कुछ कार्य किसी के उद्देश्य को पूरा करते हैं या नहीं। इस संबंध में, प्राकृतिक कानून नैतिकता के कई आलोचकों की शिकायत है कि सिर्फ इसलिए कि कुछ अप्राकृतिक है इसका मतलब यह नहीं है कि यह अनैतिक है, है ना? तो, जीभ को डाक टिकट, उदाहरण के लिए, या लिफाफे चाटने के लिए नहीं बनाया गया था। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि उस उद्देश्य के लिए जीभ का उपयोग करना अनैतिक है।

इसलिए, विस्तार से, हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि हम शारीरिक क्रियाओं को नैतिक रूप से उचित और अनुचित के रूप में कैसे पढ़ते हैं। सिर्फ इसलिए कि किसी विशेष शारीरिक अंग का सबसे स्वाभाविक या स्पष्ट उपयोग एक चीज़ है, इसका मतलब यह नहीं है कि इसे दूसरे

संदर्भ में इस्तेमाल करना अनैतिक है। तो यह प्राकृतिक कानून नैतिकता में स्थायी चुनौतियों में से एक है।

तो, यह प्राकृतिक कानून नैतिकता है।

यह डॉ. जेम्स एस. स्पीगल द्वारा ईसाई नैतिकता पर दिया गया व्याख्यान है। यह सत्र 8 है, प्राकृतिक कानून नैतिकता।